

Topic: अभिप्रेरणा का अर्थ, परिभाषा, प्रकार एवं सिद्धान्त

अभिप्रेरणा का अर्थ, परिभाषा, प्रकार एवं सिद्धान्त

अभिप्रेरणा की परिभाषा

1. **वर्नाड के अनुसार** “प्रेरणा से तात्पर्य उन घटनाओ से है जो किसी विशेष उद्देश्य की ओर क्रिया को उत्तेजित करती है जबकि इससे पहले उस लक्ष्य की ओर कोई क्रिया या तो नहीं थी या बहुत कम क्रिया सम्भव थी।”
2. **लावेल के अनुसार** “अभिप्रेरणा एक ऐसी मनोशारीरिक प्रक्रिया है जो किसी आवश्यकता की संतुष्टि करेगी” जैसे भूख लगने पर खाना खाना।

प्रेरणा के स्रोत

1. **आवश्यकताएँ** - प्रत्येक पार्णी की कछु मौलिक आवश्यकताएँ होता है। जिसके बिना उसका अस्तित्व सम्भव नहीं है जैसे भोजन, पानी, हवा इत्यादि। इन आवश्यकताओं की तृप्ति पर ही व्यक्ति का जीवन निर्भर करता है।
2. **चालक** - पार्णी की आवश्यकता से चालक का जन्म होता है। चालक शक्ति का वह स्रोत है जो प्राणी को क्रियाशील करता है। जैसे भोजन की आवश्यकता से भूख - चालक की उत्पत्ति होती है। भूख चालक उसे भोजन की खोज करने के लिए प्रेरित करता है।
3. **उद्दीपन** - पर्यावरण की वे वस्तुएँ जिसके द्वारा पार्णी के चालको की तृप्ति होती है। उद्दीपन कहलाती है। भूख एक चालक है, और भूख चालक को भोजन संतुष्ट करता है। अतः भूख चालक के लिए भोजन उद्दीपन है। आवश्यकता, चालक व उद्दीपन तीनों में सम्बन्ध होता है। आवश्यकता, चालक को जन्म देती है, चालक बढ़े हुये तनाव की दशा है जो कार्य और प्रारम्भिक व्यवहार की ओर अग्रसर करता है। उद्दीपन बाहरी वातावरण की कोई भी वस्तु होती

Topic: अभिप्रेरणा का अर्थ, परिभाषा, प्रकार एवं सिद्धान्त

है। जो आवश्यकता की सन्तुष्टि करती है और इस प्रकार क्रिया के द्वारा चालक को कम करती है।

4. **प्रेरक** - प्रेरक शब्द व्यापक है। प्रेरको को आवश्यकता, इच्छा, तनाव, स्वभाविक स्थितियाँ, निर्धारित प्रवृत्तियाँ, रूचि, स्थायी उद्दीपक आदि से जाना जाता है। यह किसी विशेष उद्देश्य की ओर व्यक्ति को ले जाते है।

आवश्यकता - पदानुक्रम सिद्धान्त-

यह सिद्धान्त मानवतावादी मासलो द्वारा दिया है। इनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति मे जन्म से ही आत्माभि व्यक्ति की क्षमता होती है जो व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करती है। मासलो ने आवश्यकताओ या मानव अभिप्रेरको को एक क्रम मे रखा। मानवीय आवश्यकताए मुख्य रूप से पाँच होती है।

1. **शारीरिक आवश्यकताए** - यह सबसे नीचे के क्रम में आती है इसमे भूख प्यास, काम आदि शारीरिक आवश्यकताएं आती हैं। सबसे पहले व्यक्ति इन आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।
2. **सुरक्षा की आवश्यकता-** यह शारीरिक आवश्यकताओ के बाद आती है। इसमे शारीरिक तथा संवेगिक दुर्घटनाओ से बचाने की आवश्यकता सम्मिलित है इसमे व्यक्ति डर तथा असुरक्षा से बचने की कोशिश करता है।
3. **सदस्य होने तथा स्नेह पाने व देने की आवश्यकता** - इस तरह की आवश्यकता के कारण व्यक्ति परिवार, स्कूल, धर्म, प्रजाति, धार्मिक पार्टी के साथ तादाम्य स्थापित करता है। व्यक्ति अपने समूह के अन्य सदस्यो के साथ स्नेह दिखाता है तथा उनसे स्नेह पाने की कोशिश करता है।
4. **सम्मान की आवश्यकता** - प्रथम तीन आवश्यकताओ की सन्तुष्टि होने पर सम्मान की आवश्यकता की उत्पत्ति होती है। इसमे आन्तरिक सम्मान कारक जैसे आत्मसम्मान, उपलब्धि, स्वायत्तता तथा ब्राह्य सम्मान कारक जैसे पद, पहचान आदि सम्मिलित होते है।
5. **आत्म सिद्धि की आवश्यकता** - आत्मसिद्धि सबसे उपरी स्तर की आवश्यकता है। यह पर सभी लोग नहीं पहुँच पाते है। आत्मसिद्धि मे अपने अन्दर छिपी क्षमताओ को पहचानकर उसे ठीक तरह से विकसित करने की आवश्यकता है।

Topic: अभिप्रेरणा का अर्थ, परिभाषा, प्रकार एवं सिद्धान्त

प्रेरणा की विधियां

पुरस्कार -

यह प्रेरणा देने की अत्यन्त प्रमुख विधि है। क्योंकि इसके द्वारा व्यक्ति को एक स्तर प्राप्त होता है। सन्तोष मिलता है, उत्साह प्राप्त होता है, कार्य में रूचि आती है, व्यक्ति कार्य करने के लिए अधिक लीन हो जाता है। पुरस्कार मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं।

1. **मौखिक पुरस्कार** - प्रशंसा करना।
2. **चिन्हित पुरस्कार** - मेडल, गोल्ड स्टार, मानक उपधि, फिल्मफेयर अवार्ड इत्यादि।
3. **भौतिक पुरस्कार** - टाफी देना, धन देना इत्यादि।

रेली एवं लिविस ने पुरस्कार को प्रभाव पूर्ण बनाने के लिए निम्न लिखित सुझाव दिये हैं।

1. पुरस्कार स्वयं का प्राप्त किया हुआ होना चाहिए।
2. छोटे कार्यों के लिए पुरस्कार नहीं देना चाहिए।
3. पुरस्कार सदैव विशिष्ट कार्य के लिए दिए जाना चाहिए, सामान्य कार्य के लिए नहीं।
4. छात्रों को यह पता होना चाहिए कि उसका निष्पादन दूसरे से कितना श्रेष्ठ है। प्रत्येक पुरस्कार के लिए नियम निर्धारित होने चाहिए।
5. पुरस्कार को तुरन्त दिया जाना चाहिए।

दण्ड -

दण्ड के द्वारा व्यक्ति में असंतोष तथा अरूचि उत्पन्न होती है। दण्ड मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं।

1. **मौखिक दण्ड** - डाँटना, आलोचना करना इत्यादि।
2. **शारीरिक दण्ड** - सजा देना, मारना, मुर्गा बनाना इत्यादि।

जोन्स, ब्लेयर तथा सिम्पसन ने 1965 में यह पाया कि-

Topic: अभिप्रेरणा का अर्थ, परिभाषा, प्रकार एवं सिद्धान्त

1. दण्ड के द्वारा ईर्ष्या तथा विद्वेष की भावना बढ़ती है।।
2. इससे छात्रों में संवेगात्मकता इस हद तक बढ़ती है कि इससे सीखना लगभग असम्भव हो जाता है।
3. यह विद्यार्थियों में तनाव, चिन्ता एवं थकान उत्पन्न करती है।
4. इससे कक्षा मारेल निम्न हो जाता है।

श्रेणी अथवा अंक -

श्रेणी अथवा अंक भी अच्छे प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं। यह एक प्रकार के चिन्हित पुरस्कार है। सारे विद्यार्थियों को एक आधार पर श्रेणी नहीं देनी चाहिए क्योंकि कुछ विद्यार्थी आसानी से उस श्रेणी को प्राप्त कर लेते हैं और उनमें श्रेष्ठता की भावना विकसित हो जाती है जबकि अन्य विद्यार्थियों को उसी श्रेणी लाने के लिए कठोर परिश्रम करना है।

सफलता -

प्रेरणा देने का प्रमुख आधार है बालक को अपने कार्य में सफल बनाना। सफलता ही व्यक्ति को किसी कार्य को करने के लिए प्रेरित करती है। अंग्रेजी में एक कहावत है "Nothing Succeed Like Success" सफलता से व्यक्ति में आत्मविश्वास बढ़ता है यह आत्मविश्वास व्यक्ति में पाने योग्य लक्ष्य को निर्धारित करता है।

प्रतिद्वन्दिता एवं सहयोग-

प्रतिद्वन्दिता कभी - कभी सकारात्मक प्रेरणा के रूप में कार्य करती है। यह तीन प्रकार से कार्यगत होती है।

1. छात्रों में अपने सहयोगियों के साथ अन्तःव्यक्तिगत प्रतिद्वन्द्विता होनी चाहिए। परन्तु मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षा शास्त्रियों से इसको बहुत अधिक महत्व नहीं दिया है।
2. समूह प्रतिद्वन्दिता आपस में सहयोग की भावना का विकास करती है।

Topic: अभिप्रेरणा का अर्थ, परिभाषा, प्रकार एवं सिद्धान्त

3. अपने स्वयं से प्रतिद्वन्दिता - इस प्रकार की प्रतिद्वन्दिता सबसे प्रभावशाली होती है तथा मानसिक स्वास्थ्यकर्त्ताओं के द्वारा इसको प्रभावशाली बताया गया है। शिक्षा के दार्शनिक आधार के अनुसार शैक्षिक कार्यक्रम में आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने का काम करता है। तथा व्यक्तियों में संवेगात्मक संतोष पैदा करती है।

परिणाम का ज्ञान- प्रेरणा प्रदान करने की यह सबसे ज्यादा प्रभावपूर्ण विधि है। छात्रों को इस बात का ज्ञान करवाना अत्यन्त आवश्यक है कि वह जिस समूह का सदस्य है उस समूह के अन्य लोग कैसा कर रहे हैं। छात्र को अपनी स्वयं की उन्नति की जानकारी देनी चाहिए जिससे वह अधिक परिश्रम से कार्य कर सके।

नवीनता- नवीनता ज्ञान प्राप्त करने में प्रेरणा का कार्य करती है। शिक्षक को नवीनता लाने के लिए शिक्षण की विभिन्न विधियों को प्रयोग में लाना चाहिए।

महत्वाकांक्षा का स्तर- महत्वाकांक्षा का स्तर यह निर्धारित करता है कि किसी भी व्यक्ति ने अपने लिये क्या, कितना कठिन लक्ष्य निर्धारित किया है। कुछ विद्यार्थी अपने लिए अपनी योग्यतानुसार लक्ष्य निर्धारित करते हैं जबकि अन्य विद्यार्थी या तो बहुत उच्च या निम्न लक्ष्य निर्धारित करते हैं। शिक्षक का यह कर्त्तव्य है कि वह छात्रों के महत्वाकांक्षा के स्तर के आधार पर लक्ष्य निर्धारित करने में उनकी सहायता करें।

रूचि -प्रेरणा प्रदान करने के लिए सर्वप्रथम शिक्षक को छात्रों की रूचियों को जानना चाहिए। बालक की पाठ में रूचि उत्पन्न करनी चाहिए। अतः अध्यापक को पढ़ाए जाने वाले पाठ को बालक की रूचि से सम्बन्धित करना चाहिए।

लक्ष्य का प्रभाव-टोलमेन के अनुसार किसी भी व्यक्ति का व्यवहार लक्ष्य केन्द्रित या उद्देश्यपूर्ण होता है शिक्षक को ऐसे लक्ष्यों का निर्धारण करे जो छात्रों की आवश्यकतानुरूप हो।

Dr Vijay Pratap Singh
Department of Psychology
BMA College, Baheri, Darbhanga.
D(I)H Paper I-Basic Psychological Processes

12-11-2020

Topic: अभिप्रेरणा का अर्थ, परिभाषा, प्रकार एवं सिद्धान्त

आत्मीयता-उच्च स्तर के विद्यार्थियों के लिए यह विधि प्रेरणा प्रदान करने के लिए अत्यन्त सहायक होती है। इसके लिए छात्रों से प्रश्न पूछना, विषय से सम्बन्धित कहानी सुनाना, शारीरिक क्रियाओं में छात्रों की भागीदारी, प्रशंसा, छात्रों को नाम से सम्बोधित करना आदि विधियों को अपनाया जा सकता है।
